3 बुद्धि बड़ी या पैसा

अक्सर लोग पैसे का घमंड करते हैं। कुछ लोग सोचते हैं कि जिसके पास पैसा है, वह पूर्णतः समर्थ है, किंतु सच्चाई इससे अलग ही है। बुद्धि के बिना रुपया-पैसा सब व्यर्थ है। जिसके पास बुद्धि है, वह जितना चाहे पैसा कमा सकता है, पर पैसे वाला व्यक्ति बिना बुद्धि के सब कुछ गँवा सकता है।

कभी-कभी हमें उन लोगों से शिक्षा मिलती है, जिन्हें हम अभिमानवश अज्ञानी समझते हैं। — चाणक्य

किसी देश में एक राजा राज करता था। वह बहुत संपन्न और अहंकारी था। वह सोचता था कि पैसे के बल पर दुनिया के सब काम-काज चलते हैं। वह सबसे यही कहता था कि इस संसार में धर्म-कर्म, स्त्री-पुत्र, मित्र-सखा सब पैसा ही है।

राजा सिर से पैर तक पैसे के मद में डूबा था, परंतु उसकी रानी बड़ी बुद्धिमती थी। वह पैसे को तुच्छ और बुद्धि को श्रेष्ठ समझती थी। उसका कहना था कि दुनिया पैसे के बूते उतनी नहीं चलती, जितनी बुद्धि के बूते पर।

एक दिन राजा ने पूछा, "रानी, सच कहो, दुनिया में बुद्धि बड़ी है या पैसा?"

वह बोली, "महाराज, यदि आप सच पूछते हैं, तो मैं बुद्धि को बड़ा समझती हूँ। बुद्धि से ही पैसा आता है। बुद्धि न हो तो सब खज़ाने यों ही लुट जाते हैं। राजपाट चौपट हो जाते हैं।"

पैसे की इस प्रकार निंदा सुनकर राजा को बहुत गुस्सा आया। वह बोला, "रानी! तुम्हें अपनी बुद्धि का बड़ा घमंड है। मैं देखना चाहता हूँ कि तुम बिना पैसे के बुद्धि के सहारे कैसे काम चलाती हो।" ऐसा कहकर उसने रानी को नगर के बाहर एक मकान में रख दिया। सेवा के लिए दो-चार नौकर भेज दिए। खर्च के लिए न तो एक पैसा दिया और न किसी तरह का कोई सामान। रानी के शरीर पर जो जेवर थे, वे भी उतरवा लिए। रानी मन-ही-मन कहने लगी, "मैं एक दिन राजा को दिखा दूँगी कि संसार में बुद्धि भी कोई चीज़ है, पैसा ही सब कुछ नहीं है।"

नये मकान में पहुँचकर रानी ने नौकर द्वारा दो ईंटें मँगवाईं और उन्हें सफ़ेद कपड़े में लपेटकर ऊपर से अपने नाम की मुहर लगा दी। फिर नौकर को बुलाकर कहा, "तुम मेरी इस धरोहर को धन्नू सेठ के घर ले जाओ। कहना कि रानी ने यह धरोहर भेजी है और दस हज़ार रुपये मँगाए हैं। कुछ दिनों में तुम्हारे रुपये सूद के साथ लौटा दिए जाएँगे और धरोहर वापस ले ली जाएगी।"

नौकर सेठ के यहाँ पहुँचा। धरोहर पर रानी के नाम की मुहर देखकर सेठ समझा कि इसमें कोई कीमती जेवर होंगे। उसने दस हज़ार रुपये चुपचाप दे दिए। रुपये लेकर नौकर रानी के पास आया। रानी ने इन रुपयों से व्यापार शुरू किया। रानी स्वयं व्यापार की देख-रेख करने लगी। थोड़े ही दिनों में उसने इतना धन कमा लिया कि सेठ के रुपये चुक गए और काफ़ी रुपये बच गए। इन रुपयों से उसने गरीबों के लिए मुफ़्त दवाखाना, पाठशाला तथा अनाथालय खुलवा दिए। चारों ओर रानी की जय-जयकार होने लगी। शहर के बाहर रानी के मकान के आसपास बहुत-से मकान बन गए और वहाँ अच्छी रौनक रहने लगी।

इधर रानी के चले जाने पर राजा अकेला रह गया। रानी राजकाज में उचित सलाह देती थी। धूर्तों की दाल उसके सामने नहीं गल पाती थी। अब उसके चले जाने पर धूर्तों की बन आई। धूर्त लोग आ-आकर राजा को लूटने लगे। राजा अपना मन बहलाने के लिए राजकाज मंत्रियों को सौंपकर देशाटन के लिए निकल पड़ा।

जाते समय नगर के बाहर ही उसे कुछ ठग मिले। उनमें से एक काना आदमी राजा के पास आकर बोला, "महाराज, मैंने अपनी एक आँख आपके यहाँ दो हज़ार में गिरवी रखी थी। वादे के अनुसार अब आप अपने रुपये लेकर मेरी आँख मुझे वापस कीजिए।"

राजा बोला, "भाई, मेरे पास किसी की आँख-वाँख नहीं है। तुम मंत्री के पास जाकर पूछो।"

ठग बोला, "महाराज, मैं मंत्री को क्या जानूँ? मैंने तो आपके पास आँख गिरवी रखी थी, आप ही मेरी आँख दें। यदि आप मेरी आँख न देंगे, तो आपकी बड़ी बदनामी होगी।"

राजा बड़ा परेशान हुआ। बदनामी से बचने के लिए उसने जैसे-तैसे चार हज़ार रुपये देकर उसे विदा किया। कुछ दूर आगे चला था कि एक बूढ़ा आदमी उसके सामने आकर खड़ा हो गया।

पहले ठग के समान वह भी कहने लगा, "महाराज, मैंने अपना एक कान आपके यहाँ गिरवी रखा था। रुपया लेकर मेरा कान मुझे वापस कीजिए।" राजा ने उसे भी रुपया देकर विदा किया। इस प्रकार रास्ते में कई ठग आए और राजा से रुपया ऐंठकर चले गए। राजा जो कुछ रुपया-पैसा साथ लाए थे, वह ठगों ने लूट लिया। वे खाली हाथ राजकुमारी चौबोला के देश में पहुँचे।

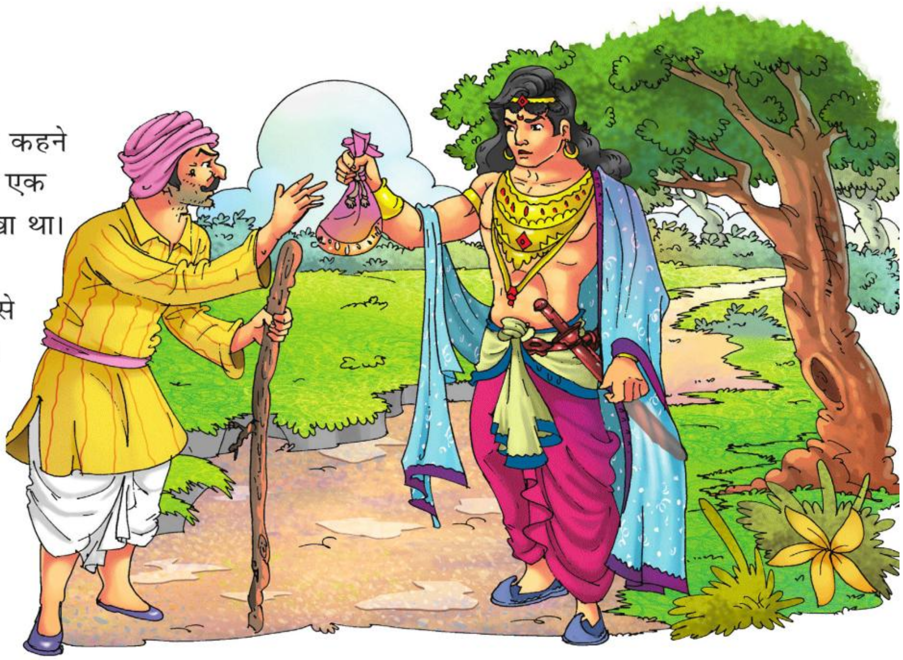

राजकुमारी चौबोला सिंह देश की राजकन्या थी। उसका प्रण था कि जो आदमी उसे शतरंज में हरा देगा, वह उसी के साथ विवाह करेगी। राजकुमारी बहुत सुंदर थी। दूर-दूर के लोग उसके साथ शतरंज खेलने आते थे और हारकर जेल की हवा खाते थे। सैकड़ों राजकुमार जेल में पड़े थे। मुसीबत के मारे राजा साहब भी उसी देश में आ पहुँचे। जब चौबोला की सुंदरता की खबर उनके कानों में पड़ी, तो उनकी भी इच्छा उसके साथ विवाह करने की हुई। राजकुमारी ने महल से कुछ दूरी पर एक बँगला बनवा दिया था। विवाह की इच्छा से आनेवाले लोग इसी बँगले में ठहरते थे। राजा भी उस बँगले में जा पहुँचा। पहरेदार ने तुरंत राजकुमारी को खबर दी। थोड़ी देर बाद एक तोता उड़कर आया और राजा की बाँह पर बैठ गया। उसके गले में एक चिट्ठी बँधी थी, जिसमें विवाह की शर्तें लिखी थीं। अंत में यह भी लिखा था कि यदि तुम शतरंज में हार गए, तो तुम्हें जेल की हवा खानी पड़ेगी।

थोड़ी देर बाद राजा को राजकुमारी के महल में बुलाया गया। खेल शुरू हुआ और राजा हार गया। शर्त के अनुसार वह जेल भेज दिया गया।

राज्य की हालत बिगड़ने और राजा के नगर छोड़कर चले जाने का समाचार जब रानी को मालूम हुआ, तो उसे बहुत दु:ख हुआ। वह राजा का पता लगाने निकली। कुछ ही दूर चली थी कि वही पुराने ठग फिर आ गए। सबसे पहले वही काना आया और कहने लगा, "रानी साहिबा, आपके पास मेरी आँख दो हज़ार में गिरवी रखी थी। आप अपने रुपए लेकर मेरी आँख वापस दीजिए।"

रानी बोली, "बहुत ठीक, मेरे पास बहुत-से लोगों की आँखें गिरवी रखी हैं, उन्हीं में तुम्हारी भी होगी। एक काम करो। तुम अपनी दूसरी आँख निकालकर मुझे दो। उसके तौल की जो आँख होगी, वह तुम्हें दे दी जाएगी।"

रानी का जवाब सुनकर ठग बहुत घबराया। वह हाथ-पैर जोड़कर माफ़ी माँगने लगा।

अंत में ठग ने विनती करके चार हज़ार रुपए देकर अपनी जान बचायी। यही हाल कान वाले ठग का हुआ। जब उसने देखा कि रानी का नौकर दूसरा कान काटने ही वाला है, तो उसने भी चार हज़ार रुपए देकर रानी से अपना पिंड छुड़ाया।

ठगों से निपटकर रानी आगे बढ़ी और पता लगाते-लगाते राजकुमारी चौबोला के देश में जा पहुँची। राजा के जेल जाने का समाचार सुनकर उसे दुःख हुआ। अब वह राजा को जेल से छुड़ाने का उपाय सोचने लगी। उसने पता लगाया कि राजकुमारी चौबोला किस प्रकार शतरंज खेलती है। सारा भेद समझकर उसने पुरुष का भेष बनाया।

रानी पुरुष-वेश में राजकुमारी चौबोला के महल में पहुँची और शतरंज के खेल में राजकुमारी चौबोला रानी से हार गईं। राजकुमारी के विवाह की तैयारियाँ होने लगीं। रानी बोली, "विवाह तो शर्त पूरी होते ही हो गया, रहा भाँवरें पड़ने का दस्तूर, तो वह घर चलकर कर लिया जाएगा। वहीं पर धूम-धाम के साथ शादी की जाएगी।"

राजकुमारी का विवाह निश्चित होते ही सारे कैदी छोड़ दिए गए। दूसरे दिन सवेरे रानी राजकुमारी चौबोला को विदा कराकर हाथी-घोड़े, दास-दासी और बहुत सारे धन के साथ अपने नगर को चली। कुछ दिन में वह अपने नगर में आ पहुँची और नगर के बाहर अपने मकान में ठहर गई। राजा जब लौटकर अपने नगर में आए, तो देखते क्या हैं कि रानी के मकान के पास औषधालय, पाठशाला, अनाथालय आदि कई इमारतें बनी हैं। देखकर राजा अचंभे में आ गया। सोचने लगा, रानी

को मैंने एक पैसा तो दिया नहीं था, उसने ये लाखों की इमारतें कैसे बनवा लीं? राजा को रानी की बुद्धिमता पर विश्वास हो गया।

राजा ने लज्जित होकर सिर नीचा कर लिया। फिर कुछ देर सोचकर रानी से कहने लगा, "रानी, अभी तक मैं बड़ी भूल में था। तुमने मेरी आँखें खोल दीं। अभी तक मैं पैसे को ही सब कुछ समझता था, पर आज मेरी समझ में आया कि बुद्धि के आगे पैसा कोई चीज़ नहीं है।"

शुभ मुहूर्त में राजकुमारी चौबोला का विवाह राजा के साथ धूमधाम से हो गया। दोनों रानियाँ हिल-मिलकर आनंदपूर्वक रहने लगीं।

(बुंदेलखंड की लोक कथा)